श्री गायत्री स्तुतिः

श्री गायत्री स्तुतिः

महेश्वर उवाच -
जयस्व देवि गायत्रि महामाये महाप्रभे |
महादेवि महाभागे महासत्त्वे महोत्सवे ||1||

दिव्यगंधानुलिप्तांगि दिव्यस्रग्दामभूषिते |
वेदमातर्नमस्तुभ्यं त्र्यक्षरस्थे महेश्वरि ||2||

त्रिलोकस्थे त्रितत्त्वस्थे त्रिवह्निस्थे त्रिशूलिनि |
त्रिनेत्रे भीमवक्त्रे च भीमनेत्रे भयानके ||3||

कमलासनजे देवि सरस्वति नमोऽस्तु ते |
नमः पंकजपत्राक्षि महामायेऽमृतस्रवे ||4||

सर्वगे सर्वभूतेशि स्वाहाकारे स्वधेऽम्बिके |
संपूर्णे पूर्णचंद्राभे भास्वरांगे भवोद्भवे ||5||

महाविद्ये महावेद्ये महादैत्यविनाशिनि |
महाबुद्ध्युद्भवे देवि वीतशोके किरातिनि ||6||

त्वं नीतिस्त्वं महाभागे त्वं गीस्त्वं गौस्त्वमक्षरं |
त्वं धीस्त्वं श्रीस्त्वमोंकारस्तत्त्वे चापि परिस्थिता |
सर्वसत्त्वहिते देवि नमस्ते परमेश्वरि ||7||

इत्येवं संस्तुता देवी भवेन परमेष्ठिना |
देवैरपि जयेत्युच्चैरित्युक्ता परमेश्वरी ||8||

इति श्रीवराहमहापुराणे महेश्वरकृता गायत्रीस्तुतिः संपूर्णा |

हिंदी भावार्थ -
भगवान् महेश्वर बोले -महामाये ! महाप्रभे! गायत्रीदेवि! आपकी
जय हो! महाभागे ! आपके सौभाग्य, बल, आनंद--सभी असीम हैं |

दिव्य गंध एवं अनुलेपन आपके श्रीअंगोकी शोभा बढाते हैं | परमानंदमयी देवि! दिव्य मालाएँ एवं गंध आपके श्रीविग्रहकी छवि बढाती हैं | महेश्वरि! आप वेदों की माता हैं | आप ही वर्णोंकी मातृका हैं | आप तीनों लोकों मे व्याप्त हैं | तीनों अग्नियों मे जो शक्ति है, वह आपका ही तेज है | त्रिशूल धारण करनेवाली देवि! आपको मेरा नमस्कार है | देवि ! आप त्रिनेत्रा, भीमवक्त्रा, भीमनेत्रा और भयानका आदि अर्थानुरूप नामों से व्यवहृत होती हैं | आप ही गायत्री और सरस्वती हैं | आपके लिये हमारा नमस्कार है | अंबिके ! आपकी आँखें कमल के समान हैं | आप महामाया हैं | आपसे अमृतकी वृष्टि होती रहती है ||1 -4||

सर्वगे ! आप संपूर्ण प्राणियों की अधिष्ठात्री हैं | स्वाहा और स्वधा आपकी ही प्रतिकृतियाँ हैं ; अतः आपको मेरा नमस्कार है | महान् दैत्यों का दलन करनेवाली देवि! आप सभी प्रकारसे परिपूर्ण हैं | आपके मुख की आभा पूर्णचंद्र के समान है | आपके शरीर से महान् तेज छिटक रहा है | आपसे ही यह सारा विश्व प्रकट होता हे | आप महाविद्या और महावेद्या हैं | आनंदमयी देवि ! विशिष्ट बुद्धिका आपसे ही उदय होता हे | आप समयानुसार लघु एवं बृहत् शरीर भी धारण कर लेती हैं | महामाये! आप नीति, सरस्वती, पृथ्वी एवं अक्षरस्वरूपा हैं | देवि! आप श्री, धी तथा ओंकारस्वरूपा हैं | परमेश्वरि! तत्त्वमें विराजमान होकर आप अखिल प्राणियों का हित करती हैं | आपको मेरा बार -बार नमस्कार है ||5 -7||

इस प्रकार परम शक्तिशाली भगवान् शंकरने उन देवीकी स्तुति की और देवतालोग भी बडे उच्चस्वर से उन परमेश्वरी की जयध्वनि करने लगे ||8||

इस प्रकार श्रीवराहमहापुराण में महेश्वरकृत गायत्रीस्तुति संपूर्णः ||